भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-7, अंक-1	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00
मंगलवार, 25 जन' 83	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 1.00

3 फरवरी स्वरूपानुभूति दिन

3 फरवरी का महामंगलकारी दिन आ रहा है। फरवरी मास गुणातीत समाज के इतिहास में परम मंगलकारी मास है, क्योंकि समग्र गुणातीत समाज के प्राणपुरुष प.पू. काकाजी को परम तत्त्व की स्वरूपानुभूति इस मास में हुई थी। गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी को प्रभु के भव्य स्वरूप की अनुभूति करवाए आज तीस साल बीत गए !

करोड़ों वंदन हो महाप्रभु स्वामिनारायण को कि जिन्होंने सामाजिक सेवाओं के साथ-साथ आध्यात्मिक नवसर्जन के लिए असली गुणातीत विभूतियाँ भगवत्स्वरूप संतों की विरासत अखंडित रखकर पशु से मानव, मानव से देव और देव से प्रभु के लाडले पुत्र बनाने की गुणातीत पीढ़ी कायम रख दी। अपने जीवनकाल में बीस लाख की जड़ प्रजा का आमूलचूल परिवर्तन करने वाले वे महाप्रभु स्वामिनारायण का सामर्थ्य कैसा होगा? और...साथ-साथ भगवन्मूर्तिसिद्ध जीवन मुक्तों एवं गुणातीत स्वरूपों की दिव्य विरासत भी चिरंजीव कर दी। फलस्वरूप जूनागढ़ के मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी के समागम से प्रभु का सम्बन्ध रखने वाले सद्गुरु बालमुकुंदस्वामी, सद्गुरु कृष्णचरणस्वामी, रैयो देसाई वगैरह कितने ही जीवन मुक्तों को सौराष्ट्र की धरती ने देखे। इनके द्वारा गुणातीतज्ञान का विस्तार भी अत्यधिक हुआ। ऐश्वर्य, प्रताप, सिद्धदशा और अलौकिक झाकझमक भी इनमें दिखाई पड़े। साथ-साथ भगवत्स्वरूप प.पू. भगतजी महाराज, प.पू. जागास्वामी और प.पू. कृष्णजी अदा जैसी प्रभु की साक्षात् मूर्तिस्वरूप विभूतियों ने स्वयं अतिसमर्थ होते हुए भी अत्यंत छुपे रहकर, सेवकभाव से प्रभु का कार्य किया। स्वयं प्रकाशित हीरे के समान भगवान के भव्यस्वरूपों के रूप में वे कार्य कर गए....और आज भी गुरुहिर योगीजी महाराज के माध्यम से नैसर्गिकी शुद्ध ब्रह्मीस्थिति को पा करके प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिश्री और प.पू. महंतस्वामिजी जैसी विभूतियाँ स्वयं प्रकाशित हीरे की तरह चैतन्यप्रवाह बहा रहे हैं।

हीरे तो वैसे कई प्रकार के होते हैं, परन्तु स्वयं प्रकाशित हीरा कोई ही निकलता है। और उसका मूल्य अमूल्य होता है। ठीक इसी तरह प्रभु या प्रभु के भाव को पाई हुई विभूतियाँ ही स्वयं प्रकाशित

होती हैं। प्रभु में अंखंड रहनेवाली विभूति ही स्वयं प्रकाशित है। इनकी महिमा गंगा की तरह स्वयं स्वियंसिद्ध है।

भारत में नदियां तो कितनी ही हैं, परन्तु गंगा की महिमा सबसे अलग है। उसका इतिहास, उसका जीवन, उसका प्रवाह–यह सब अनोखा है। भगीरथ ने तपस्या करी और प्रभु के चरणों से यह सुरसरिता निकली शंकर की जटा में समाई और जैसे-जैसे आगे बढ़ी, सभी को कुछ न कुछ देती रही। गंगा उसके उद्‌भवस्थान गंगोत्री के कारण प्रसिद्ध नहीं हुई न उसके तट पर आए हुए हरिद्वार, ऋषिकेष या प्रयाग के कारण उसकी महिमा हुई है। दरअसल तो इन स्थानों को गंगा ने पावन किया है, गंगा के कारण इनकी महिमा बढ़ी है। गंगा की महिमा तो स्वयंसिद्ध है।

महिमा तो यमुना की भी है; परन्तु इसका कारण यह है कि यमुना के तट पर श्रीकृष्णलीलायें हुई हैं। इसी कारण वहां के वातावरण में अब भी भक्ति की सौरभ फैली हुई है। वसुदेवजी श्री कृष्ण को लेकर उन्हें पहुँचाने नंदराजा के घर गए, वहां से प्रभु और यमुना का संपर्क शुरु हुआ और मथुरा को छोड़ कर प्रभु द्वारिका गए, तब तक वह सम्बन्ध चालू रहा। बाकी, दिल्ली और आगरा में भी यमुना बहती है, बड़े-बड़े दुर्ग और महल उसके तट पर खड़े है... इतिहास के कई खेल भी यहां खेले गए हैं। परन्तु यहां यमुना की कोई स्वतंत्र महिमा नहीं है। यहां वह महिमा न्यून सी है क्योंकि यहां श्री कृष्ण का कोई सम्बन्ध नहीं है।

इस प्रकार यमुना की महिमा भगवान कृष्ण की महिमा से सम्बन्धित है–उस पर आधारित है। 'यह उसकी मर्यादा है'–यही ख्याल रखकर तो प्रयाग पहुंचते ही यमुना अपना अस्तित्व गंगा को समर्पित कर देती है। संगम होने के बाद 'गंगा रही' और यमुना मिट गई'–उसका भी रहस्य है। गंगा के पास यमुना का अस्तित्व टिक ही नहीं पाता ! संगम के बाद भी गंगा समुद्र तक गंगा ही रही इतना ही नहीं, उसका समुद्र संगम भी 'गंगासागर' के रूप में पहचाना जाता है !! इस प्रकार गंगा की एक स्वतन्त्र महिमा है।

ठीक इसी प्रकार साक्षात्कार अनेक प्रकार के हो सकते हैं। ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ने सौराष्ट्र के 'लींबड़ी' गांव में संतों-मुक्तों के समक्ष स्पष्टीकरण करने पूछा था–क्या ज्वाला देखनी, सिद्धाई देखनी या प्रकाश दिखाई पड़े–उसे तुम सच्चा साक्षात्कार गिनते हो? फिर स्वयं ही उत्तर दिया कि–'अक्षरधाम में जो मूर्ति है, वही मूर्ति मुझे मानव स्वरूप में इस स्वरूप द्वारा साक्षात् मिली है, ऐसा अपरोक्ष ज्ञान जीवात्मा में दृढ़ हो जाये और सारा सत्संग दिव्य मनाई पड़े, जहां कोई भेद दृष्टि न हो और प्रभु से अल्पसम्बन्धित जन भी ब्रह्म की मूर्तिरूप दिखाई पड़े। –वह है सच्चा साक्षात्कार ! गुणातीत भावना की मंगलकारी अवस्था का....आत्मा में परमात्मा का यहां प्राकट्य है। दृष्टा, दृश्य और दर्शन का यहां ऐक्य है। वेदों के चार महाकाव्यों की यहां पूर्णाहुति है। बाकी भगवान का अनुभव कई जीवनमुक्तों को इनके अपने-अपने ढंग से होता भी है और उससे सिद्धदशा भी प्राप्त होती है। भक्तकवि नरसिंह और प्रेमदिवानी मीरां को भी एक दर्शन था ही। महाराज के समय में पू. सच्चिदानंदस्वामी और पू. स्वरूपानंदस्वामी को भी महाराज का एक दर्शन था। परन्तु हमारी मूलभूत प्रकृति निर्मूल होकर, ब्रह्म-परब्रह्म की ज्ञानसमाधि में हम अखंड रहें, आत्मा में परमात्मा का अखंड सम्बन्ध रहें, जहां कि विचार भाव, संकल्प और क्रिया सर्वतया और समग्रतया महाराज की मूर्ति में से ही हो, इन्द्रियां अन्तःकरण का प्रवाह निरंतर प्रभुमय रहे और हमारे सम्पर्क में आया हुआ जीव जाग्रत होकर

ब्राह्मीस्थिति को पाकर परब्रह्म में जुड़ जाए–ऐसी गुणातीतस्थिति अध्यात्मयोगी का परम साक्षात्कार है। भगवान स्वयं जिसे अपनी कल्याणयोजना का साझीदार बनाना पसन्द करते हैं या अपना जो प्रियपात्र हो उसे ही भगवत्कृपा से ऐसा सम्यकदर्शन प्राप्त होता है। दूसरे को तो इस दर्शन की कल्पना भी नहीं आ सकती।

प.पू. काकाजी कई बार कहते हैं–'मुझे सारा सत्संग दिव्य दिखाई पड़ता। कभी किसी का तनिक भी अभाव नहीं आता। स्त्री-पुरुष भेद दिखाई ही नहीं पड़ता। मुझे सभा ब्रह्म की मूर्ति दिखाई पड़ती है !' कैसी अलमस्त अवस्था होगी यह? और...गंगा जैसे आगे बढ़ती हुई सभी को कुछ न कुछ देती रही, वैसे ही हम देखते हैं कि प.पू. काकाजी स्वयं को प्राप्त यह अद्‌भुत रहस्यदर्शन का लाभ लुटाते रहते हैं। हमारी क्षमता-पात्रता देखे बिना सभी को शाश्वत् सुख, शान्ति और आनन्द बांटते रहते हैं !

इस प्रकार के साक्षात्कार के लिए मानवरूप में दिव्य साकारस्वरूप की आवश्यकता सिद्ध पुरुषों और अवतार पुरुषों ने स्पष्टरूप से बताई है। स्वतःकरी हुई साधना या तपस्या से उपलब्ध साक्षात्कारों में कई सिद्धों और योगीओं को बाधा आई है। रिद्धि-सिद्धि और ऐश्वर्य प्रताप के चक्कर में फंस कर वे प्रतिष्ठाहीन हुए भी दिखाई पड़े हैं। यह ठीक है कि –आध्यात्मिक विकास में पीछे हठ तो नहीं है, परन्तु विकास तो रुक ही जाता है। जब कि ऐसे भगवत्स्वरूप संत के माध्यम से प्राप्त आत्मदर्शन और ब्रह्मदर्शन के अनुभव और अनुभूतियाँ प्रकृति के मूलभूत परिवर्तन के साथ संकलित हैं और वह परिवर्तन दिव्य जीवन के रूप में सभी को स्पष्ट और निश्चयात्मक दिखाई पड़ता है। यहां कोई विकारी तत्त्व टिक नहीं पाता और....वासना का संपूर्णतया क्षय होकर मूल प्रकृति का दिव्यता में रूपांतर होते ही चेतना ब्रह्मस्वरूप होकर मंगलकारी अवस्था को पाती है। सच्चे संत इसके प्रतीक हैं। ऐसे जीवन मुक्त भगवान के दास होते हुए भी प्रकृति के स्वामी हैं, जगत के मंत्रदाता हैं। ऐसी परम अवस्था को पाकर जन्म-मृत्यु श्रृंखला से निकल कर इसी जीवन में भगवान के सुख-शान्ति और आनंद को उपलब्ध करके अन्य को बांटना यही है मानवजीवन का अंतिम ध्येय !

1952 में गुरुहिर योगीजी महाराज के आदेश से संतों और मुक्तों की नहीं, परन्तु प्रत्यक्षस्वरूप से अल्पसंबंधित श्री नन्दाजी के चुनाव कार्य में प.पू. काकाजी अपना व्यवसाय आदि सब छोड़ कर हजारों रुपये खर्च कर निकल पड़े और अपने कुटुम्बियों को भी इसी सेवा में लगा कर नंदाजी को चुनाव में विजयी करने निमित्त बने, तब अहोहो भाव से की हुई इस सेवा के फलस्वरूप गुरुहरि योगीजी महाराज की पूर्ण प्रसन्नता हुई और उन्होंने प.पू. काकाजी को गोंडल के 'अक्षर मन्दिर' में लगातार 72 घंटे तक परम चेतना की अनुभूति करवाई। प.पू. काकाजी का यह साक्षात्कार गुरु गुणातीतानंदस्वामी ने पू. भगतजी महाराज को कराये साक्षात्कार समान ज्ञानसमाधि का दर्शन था। तब से लेकर आज तक प.पू. काकाजी उस ज्ञान समाधि में अखंड बिराजमान हैं। ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ने उनकी चेतना को स्थूल शरीर से अलग करके गोलोक, बैकुण्ठ, बद्रिकाश्रम, श्वेतद्वीप जैसी चैतन्य भूमिकाओं का तत्त्वतःदर्शन करवाया और....विविध अनुभूतियां करा कर ब्रह्म-परब्रह्म के दिव्यस्वरूपों की अपरोक्षानुभूति करवाई। फलस्वरूप अक्षरधाम की परात्परता का इन्हें स्पष्ट ख्याल आया और गुणातीतभावना अमर है एवं अखंडित रही है यह खात्री हुई, इतना ही नहीं–ऐसे चैतन्यस्वरूपों को वे जैसे हैं वैसे पहचानना यही भक्तपना और एकांतिकभाव है–इस रहस्य का भी

सम्यक् दर्शन हुआ।

इस सम्यक् प्रतीति के फलस्वरूप प.पू. काकाजी की महामृत्यु हुई और महाकाल से परे की अखंड प्रकाशमय-सच्चिदानंद ब्रह्म की अनंतता में इन्होंने प्रवेश पा लिया। पारस (योगीजी महाराज) ने पारस (काकाजी) का निर्माण किया !....काकाजी ब्रह्मस्वरूप हो गए ! योगीजी महाराज के चिरंजीव मानसपुत्र बन गए....परम भागवत संत बन गए।

प.पू. काकाजी की इस प्राप्ति का हमारे साथ संबंध यह है कि उस अनुभूति के बाद प.पू. काकाजी का जीवन कार्य संबंध में आये हुए सेवकों की पार्थिव प्रकृति और स्वभाव को दिव्यता में रुपान्तरित करने का ही है। इसी मिशन के लिए प.पू. काकाजी सतत् क्रियाशील हैं–यहाँ और विदेशों में भी Bodiless Divine Body Consciousness अपार्थिव दिव्य चेतना के वे वाहक हैं। इनकी चाह है कि इनके समागम में आये हुए–

– स्त्रीपुरुष भाव से ऊपर उठें,

– मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार से ऊपर उठें,

– अस्तित्व और व्यक्तित्व के ममत्व से ऊपर उठें और

– ब्रह्मभाव की भूमिका में अखंड रहें। अतः प.पू. काकाजी की प्राप्ति उनकी न रहकर समग्र मानवजाति की हो गई है। अतः 1952 का 3 फरवरी का दिन न केवल प.पू. काकाजी का विजयदिन है, बल्कि उस दिन से समग्र सृष्टि पार्थिवता छोड़कर दिव्यता में रूपान्तरित हो–ऐसे निश्चय का प्रारम्भ दिन है। फलस्वरूप एक नूतनयुग को शुरुआत हुई है और इस विभूति के सत्यसंकल्प से ही तो आज संतो, युवकों, बहनें और गृहस्थी की–चार पंखुड़ी का कमल खिल उठा है....एक ब्रह्मनियंत्रित समाज साकार हुआ है। अतः 3 फरवरी को हम एक असाधारण धार्मिक उत्सव के रूप में मनाते हैं।

तो, आइये-हम सब इस महामंगलकारी दिन खुले दिन की प्रामाणिकता से तीव्र पुकार अंतर से करें और अक्षरधाम रूप होकर महाराज की दिव्य मूर्ति के सुख, शान्ति और आनन्द से उपलब्ध हों यही प्रार्थना करें.....

पिछले अंक में हमने सूचना दी थी कि प.पू. काकाजी का स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं है...। अब प.पू. काकाजी स्वस्थ हैं और स्वस्थ होने के बाद बम्बई में 3 फरवरी के दिन स्वरूपानुभूति का मंगल उत्सव सम्पन्न करके प्रथम बार दिल्ली आ रहे हैं। सभी की इच्छा होगी कि हम प.पू. काकाजी का अति शीघ्र दर्शन करें...अब हमें अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी। 19 फरवरी, बुधवार के शुभ दिन में करुणा मूर्ति प.पू. काकाजी हमें दर्शनदान देंगे और इनकी निश्रा में, 13 फरवरी, 1983–रविवार के दिन सुबह 9 से 12 मा. श्री एच.के.एल. भगत साहेब की अध्यक्षता में स्वरूपानुभूति दिन मनायेंगे। उसी दिन दिल्ली में अपने मन्दिर के लिए प्राप्त जमीन पर दिल्ली के उपराज्यपाल मा. श्री जगमोहनजी भूमि पूजन करेंगे। 13 फरवरी रविवार के दिन उक्त पवित्र मंगल उत्सवों में सम्मिलित होकर आप अपनी कृतज्ञता समर्पित करें....दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश आदि के सब प्रियजनों को हमारा हार्दिक निमन्त्रण है।

● ● ●

....और श्रीजी महाराज ने कहा—

2. हरिभक्त हरजी ठक्कर ने श्रीजी महाराज से पूछा–''कुछ लोग बहुत दिनों तक सत्संग करते रहते हैं, फिर भी उन्हें अपनी देह और उसके संबंधियों जैसी गाढ़ी प्रीति सत्संग से नहीं होती है–इसका क्या कारण है?''

श्रीजी महाराज ने कहा–''भगवान का माहात्म्य

वे संपूर्णरूप से नहीं समझ सके हैं। और जिस साधु के संग से भगवान का माहात्म्य पूर्णरूप से जाना जा सकता है, वह जब अपने स्वभाव को छोड़ने का परामर्श देते हैं तब वे अपने स्वभाव को छोड़ तो पाते नहीं हैं, अपितु साधु में ही दोष देखने लगते हैं। इस पाप के कारण सत्संग से गाढ़ प्रीति नहीं होती है, क्योंकि अन्यत्र किये गए पाप तो संत के संग से नष्ट हो जाता हैं परन्तु संत में ही दोष ढूंढने का पाप तो उनके अनुग्रह के बिना किसी और साधन से टलते नहीं है। शास्त्र में ऐसा कहा गया है कि–

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं तीर्थक्षेत्रे विनश्यति।
तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति।।

इसलिए संत में यदि दोष नहीं देखे, तो उसे सत्संग में गाढ़ प्रीति हो जाए।''

गढ़डा प्रथम प्रकरण-1, सोमवार, 21नवें. 1819

●●●

स्वामी की बातें

6. करोड़ों रुपये खर्च करने पर भी ऐसे साधु नहीं पायेंगे और करोड़ों रुपये देने पर भी ऐसी बातें सुनने-समझने को नहीं मिलेंगी। करोड़ रुपये देने पर भी ऐसी मनुष्यदेह नहीं मिलती है और हमने भी करोड़ बार जन्म लिया है तब भी ऐसा (सम्बन्ध) योग नहीं हुआ है। यदि हुआ होता, तो अबकी देह क्यों धारण करनी पड़ती?

प्र. : 1-19

7. भगवान तो अपने भक्त की रक्षा करने के लिए नित्य तत्पर है। कैसे? जैसे पलकें आँख की रक्षा करती हैं, हाथ कंठ की रक्षा करते हैं, माँ-बाप बच्चों की रक्षा करते हैं और राजा प्रजा की रक्षा करता है–ठीक उसी प्रकार भगवान हमारी रक्षा में हैं। प्र. : 1-22

8. विषयसुख से अत्यधिक आत्मिक सुख है और इससे भी अधिक भगवान का सुख है– चिंतामणि है। प्र. : 1-26

9. हीरा किसी भी प्रकार फूट नहीं सकता है, किन्तु खटमल के खून से फूटता है। इसी प्रकार वासना भी किसी प्रकार नहीं टलती, किन्तु बड़े संत की आज्ञा में रहने से, इनका गुण ग्रहण करने से और इनकी हरेक क्रिया जँचने से वासना टलती है। वरन् साधन तो सौभरी ऋषि आदि के कैसे थे? किन्तु वासना टली नहीं।

प्र.: 1-28

10. ऐसे संत का मन में स्मरण करने से मन के पाप जल जाते है, इनकी कथा सुनने से कान के पाप जल जाते हैं और दर्शन करने से आँख के पाप जल जाते हैं–यूं माहात्म्य समझना।

प्र. : 1-30

11. त्याग, वैराग्य, नियम और धर्म की कुछ एक बातें करके बोले–त्याग वैराग्य से क्या करना है? कैसा भी जीवात्मा हो, भगवान के भक्त में जिसे आत्मबुद्धि हो वही सत्संगी है। और इसके बिना तो चाहे कोई कितनी ही भक्ति करे तब भी क्या? अतः भगवान के भक्त में आत्मबुद्धि ही सत्संग है। वह सत्संग तो रात्रिप्रलय तक करेंगे तब होगा; और तब उसे देशकाल स्पर्श ही नहीं कर पायेंगे। ऐसा सत्संग करना है। प्र. : 1-32

12. पूरे कल्प (युग) तक भगवान के सम्मुख बैठे रहेंगे परन्तु निषेध किए बिना विषय तो टलेंगे नहीं और साधु यदि मिल जाये तो वे टाले। निर्विकल्प समाधि होवे तब भी विषय तो नहीं

टलते परंतु ज्ञान की समाधि होवे तो टले।

प्र.: 1-37

13. अंतःकरणरूप माया का क्लेश खूब भारी है। क्योंकि भरतजी का वैराग्य कैसा? और कितना राज्य छोड़ा? तब भी उन्हें विघ्न हुआ। सौभरी ऋषि और पराशरऋषि आदि भी कैसे? लेकिन उन्हें भी धक्के लगे। इसलिए साधु ज्ञान देकर जन्म देते हैं और निषेध करते हैं तब यह कलेश टलता है, परंतु इसके बिना टलता नहीं है। सारी उम्र भगवान के साथ कोई रहे तब भी ज्ञान के बिना कसर टलती नहीं। प्र. : 1-38

14. प्रेमी का लगाव टंके के पानी जैसा होता है और ज्ञानी का लगाव पाताल के पानी जैसा होता है। प्रेमी का तो भगवान और साधु को रखना पड़ता है और ज्ञानी का रखना नहीं पड़ता है।

प्र. : 1-41

15. सब काम छोड़कर यहां खाली बैठकर कथा सुनते हैं वह ऐसा समझना कि करोड़ काम कर रहे हैं। वह क्या? तो, हम यमपुरी, चौरासी योनी और गर्भवास के दुःख पर सेरे लगा रहे हैं। अतः यूं नहीं समझना कि खाली बैठे हैं।

प्र. : 1-50

ध्यानाकर्षण

योगी डिवाईन सोसाइठी से संबद्ध सब आत्मीय जनों और इस पत्रिका के सब ग्राहकों को सूचनार्थ निवेदन हैं कि हमारा टेलीफोन नं. 71-8838 अब बदलकर 712-8838 हो गया है।

इस परिवर्तन को सब नोट कर लें, क्योंकि अब से योगी डिवाईन सोसाईटी के साथ दूरभाष व्यवहार 7128838 नं. पर होगा।

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	3.2.83	गुरुवार	प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन
2. दि.	11.2.83	शुक्रवार	महाशिवरात्रि, व्रत
3. दि.	13.2.83	रविवार	प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन निमित्त दिल्ली में समारोह और मंदिर निर्माण के लिए प्राप्त जमीन पर मा. गवर्नर साहब के शुभ हस्त प.पू. काकाजी की निश्रा में भूमिपूजन
4. दि.	22.2.83	मंगलवार	नवमी, श्री हरिजयंती
5. दि.	24.2.83	गुरुवार	कमला एकादशी, व्रत

Published by Sadhu Mukundjivandas for Yogi Divine Society,
A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 7128838
Printed at Thakkar printing press, 2588, Basti Punjabian, Subzi Mandi, Delhi-110 007 Phone : 524058